ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 208-211

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

छायावादयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता और 'स्वदेश'

डॉ0 निमिषा सिंह

एसो0 प्रो0– हिन्दी विभाग, जे0बी0 महाजन डिग्री कालेज, चौरी–चौरा, गोरखपुर (उ0प्र0) भारत

Received-19.06.2022, Revised-25.06.2022, Accepted-28.06.2022 E-mail: rahulrai28384@gmail.com

सारांशः– *हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता का एक सुदीर्घ इतिहास है। इतिहास के पृष्ठों में वही अंकित होता है, जिसने इतिहास को कुछ दिया हो। स्वाधीनता आन्दोलन में 'सरस्वती', 'माधुरी' और 'भतवाला' जैसी पत्रिकाओं के साथ–साथ 'स्वदेश' पत्र की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। साहित्यिक–पत्रकारिता के क्षेत्र में 'स्वदेश' एक सम्प्रेरक मिसाल बनकर सामने आता है। 'स्वदेश' ने अपने मूल्यों से कभी समझौता नहीं किया। उसने सत्य, शिव और सुन्दर के साथ श्रेष्ठतम की साधना की है। 'स्वदेश' का समय छायावाद का समय है। छायावाद की समय–सीमा 1920 से 1938 निर्धारित की गयी है और 'स्वदेश' की पृष्ठभूमि भी 1919 से 1938 के बीच की है। छः अप्रैल 1919 को 'स्वदेश' का प्रवेशांक आता है, जो कुछ व्याघात और ठहराव के साथ 1938 तक चलता है अर्थात् छायावदी साहित्यचेतना के साथ 'स्वदेश' की आत्मचेतना भी गतिशील रहती है।*

यह सुयोग है और सुनियोग भी। साहित्यिक–चेतना और पत्रकारिता का युगल–प्रयाण भी। वास्तव में छायावादी प्रकोष्ठ से उपजने वाली पत्र–पत्रिकाएँ अपने पूर्व की पत्र–पत्रिकाओं से सम्प्रेषित रही है। छायावाद से पूर्व– 'सरस्वती' (1900 ई0 महावीर प्रसाद द्विवेदी), 'अभ्युदय' (1907 ई0, मदन मोहन मालवीय), 'इन्दु' (1909 ई0, अम्बिका प्रसाद गुप्त), 'प्रताप' (1910 ई0, गणेश शंकर विद्यार्थी), 'सम्मेलन पत्रिका' (1913 ई0, रामनरेश त्रिपाठी) जैसी पत्रिकाओं ने हिन्दी के साहित्यिक क्षितिज पर तमाम बड़ी साहित्यिक प्रतिभाओं को सामने लाने का युगैतिहासिक सद्प्रयास किया है। छायावादयुगीन पत्रिकाओं में विविध विषयक यथा–साहित्य, समाज, राजनीति, इतिहास, दर्शन आदि पर न केवल विद्वतापूर्ण और प्रभावशाली लेख प्रकाशित हुए, बल्कि साहित्य के विविध रूपों के विकास में इनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। "इस काल में चूँकि स्वाधीनता आन्दोलन प्रखर रूप में सक्रिय था, तो इन पत्रिकाओं में उस स्वर को विशेष महत्त्व मिला। इसी क्रम में समाज–सुधार, देश–हित और देश की उन्नति पर बल देती हुई इस काल की पत्रिकाएँ हमारी राष्ट्र की आकांक्षाओं, प्रेरणाओं और विचारों की वाहिकाएँ बनी।"[1] "दरअसल– छायावादयुगीन साहित्यिक पत्रिकाओं का स्वरूप न सिर्फ तत्कालीन साहिय का परिचय कराना मात्र था, अपितु तद्युगीन समाज, संस्कृति और राष्ट्र का व्यापक अन्तर्दर्शन कराना भी था।"[2]

कुंजीभूत शब्द– सम्प्रेरक, व्याघात, सुयोग, सुनियोग, आत्मचेतना, सुदीर्घ, क्षितिज, सम्प्रेषित, युगैतिहासिक, अभ्युदय।

पत्रकारिता के क्षेत्र में छायावादी साहित्यकारों की रूचि साहित्यिक पत्रकारिता की ओर अधिक रही है। प्रायः सभी सिद्ध कवियों अथवा साहित्यकारों ने कोई न कोई साहित्यिक पत्रिका अवश्य निकाली। दशरथ प्रसाद द्विवेदी का सन् 1919 ई0 में निकाला पत्र 'स्वदेश' इस दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। 'स्वदेश' की दृष्टि अपने समय में सम्पूर्ण जीवन यथार्थ पर केन्द्रित थी। जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं, जहाँ उसकी दृष्टि न पड़ी हो। 6 अप्रैल 1919 को 'स्वदेश' का उदय होता है। 6 अप्रैल के दिन ही महात्मा गाँधी ने रौलेट एक्ट के विरोध में देशव्यापी हड़ताल का आह्वान किया था। 'स्वदेश' के प्रारम्भ होने के पहले ही इसके सम्पादक को 500/– रू0 की जमानत राशि जमा करनी पड़ी थी। इस तरह कुछ परेशानियों और आर्थिक दबावों के बीच 'स्वदेश' पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। 'स्वदेश' के संस्थापक पं0 दशरथ प्रसाद द्विवेदी ने गोरखपुर से जिस समय पत्रकारिता प्रारम्भ की, उस समय आज की तुलना में परिस्थितियाँ बिल्कुल अलग थी। स्वतन्त्रता–आन्दोलन के उस समय में अंग्रेजों के विरूद्ध अखबार निकालना अत्यन्त कठिन था, परन्तु द्विवेदी जी ने सारी कठिनाईयों को झेलते हुए और आर्थिक–संघर्षों को झेलते हुए, पत्रकार–जीवन का अधिकांश समय जेल में व्यतीत करते हुए 1919 से 1938 तक इस पत्र को जीवित रखा। द्विवेदी जी के अपराजेय व्यक्तित्त्व को परिभाषित करती हुई 'स्वदेश' की कुछ पंक्तियाँ हैं–'' 'स्वदेश' जिस उद्देश्य से निकला था, अभी उसे पूरा करना है। जब तक वह उद्देश्य पूरा न हो, नामुमकिन है कि हम सुख की नींद सोयें। सोयेंगे भी तो नींद नहीं आयेगी।''

'स्वदेश' पत्र का विषय वस्तु अत्यन्त व्यापक और वैविध्यपूर्ण है। एक तरफ जहाँ यह भारत के स्वाधीनता आन्दोलन को एक नयी दिशा और गति प्रदान करता है, तो वहीं दूसरी तरफ इसमें साहित्यिक निबन्ध, लेख कविताएँ, कहानियाँ, व्यंग्य एवं नाटक आदि भी प्रकाशित होते रहे हैं। इसमें तत्कालीन–राजनीतिक घटनाएँ भी प्रकाशित होती रही है। 'स्वदेश' में महात्मा गाँधी पर अनेक लेख, उनके विचार एवं उनकी राजनीतिक–विचारों की हलचल है। 'स्वदेश' में अनेक उच्चकोटि के सामाजिक लेख भी प्रकाशित हुए हैं। तत्कालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति, हिन्दू–समाज की तत्कालीन स्थिति एवं दलितों की स्थितियों

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

पर अनेक लेखकों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। 6 अप्रैल 1919 ई0 के अंक में 'एक सती का मामला' शीर्षक से एक समाचार छपा था, जो यह प्रमाणित करता है कि अनेक सुधार आन्दोलनों के बावजूद भी स्त्रियों की दशा में बहुत सुधार नहीं हो पाया। इसी अंक में 'भारतीय महिलाओं पर मिसेज बेसेन्ट' शीर्षक से एक अन्य समाचार प्रकाशित हुआ था, जिसमें मिसेज बेसेन्ट ने भारतीय स्त्रियों की दयनीय स्थिति के लिए अंग्रेजी शिक्षा को जिम्मेदार माना है। वह लिखती हैं– ''परन्तु, भारतीय स्त्रियों के शानदार इतिहास में उस समय तक कोई फर्क मालूम नहीं पड़ता, जबकि अंग्रेजी शिक्षा ने पुरूषों में एक नई सभ्यता पैदा कर दी और जिसमें स्त्रियों ने कोई भाग नहीं लिया। फलस्वरूप पुरूष तो अपने मतलब की नई दुनिया में, स्त्री को छोड़कर खिचता चला जा रहा है, परन्तु स्त्री के लिए वह मार्ग बन्द है।''[3]

'स्वदेश' में किसानों एवं दलितों की समस्याओं पर भी अनेक लेख एवं निबन्ध समय–समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। राष्ट्रीय खबरों के साथ–साथ अन्तर्राष्ट्रीय खबरों को भी समाहित कर स्वदेश ने अपनी व्यापकता और लोकप्रियता का परिचय दिया है। इस प्रकार 'स्वदेश' ने राजनीतिक, सामाजिक और साहित्सिक–सभी क्षेत्रों को अपने भीतर समाहित किया है। चूँकि 'स्वदेश' छायावादी–युग का और तत्कालीन समय का एक महत्त्वपूर्ण पत्र था, अतः इसके ऊपर अपने देश की जनता को जागृत करने का एक महत्त्वपूर्ण दायित्व था, जिसका इसने सफलतापूर्वक निर्वहन किया। अपने लेखों के माध्यम से जहॉ इसने एक और अंग्रेजी शासन को चुनौती दी, वहीं दूसरी ओर भारतीय जनता को स्वराज्य और सुराज की भावना से ओतप्रोत किया। यद्यपि 'स्वदेश' एक राजनैतिक पत्र था, परन्तु इसका साहित्यिक महत्त्व भी विशेष उल्लेखनीय है। 1919 से 1938 तक निकलने वाले इस पत्र ने अनेक कठिनाईयों एवं संघर्षों के बावजूद अनेक साहित्यकारों की रचनाओं, लेखों और निबन्धों को प्रकाशित किया। स्वदेश के साहित्यिक महत्त्व को ध्यान में रखते हुए कहा गया है कि– 'मैथिलीशरण गुप्त जयशंकर प्रसाद, मुंशी प्रेमचंद, उग्रजी, मन्नन द्विवेदी, बालकृष्णशर्मा 'नवीन', गयाप्रसाद 'सनेही' आदि की राष्ट्रवादी एवं साहित्यिक रचनाएँ 'स्वदेश' में छपती थीं। रघुपति सहाय 'फिराक' साहब ने भी 'स्वदेश' की खूब सेवा की है। मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'सेवामार्ग' 'स्वदेश' के पहले अंक (प्रेमोपहार अंक) में छपी। इसमें महात्मा गॉधी के लेख और विचार नियमित छपते थे। 'स्वदेष' में विचारपूर्ण कविताओं को प्रथम पृश्ठ पर स्थान मिलता था।''[4]

सन् 1920 छायावादी– कविता का प्रारम्भिक समय था और 'स्वदेश' का समय 1919 ई0 है। यह कविता और काव्य के क्षेत्र में वह समय था, जब कवि एक नई भाषा और शैली के साथ सामने आए। इन्हीं कवियों को छायावादी कवि और इस युग को 'छायावाद' कहा गया। इस युग में जहाँ एक तरफ प्रसाद, पंत्र एवं निराला जैसे कवि एक नये जोश और तेवर के साथ आते हैं, वहीं दूसरी ओर 'हरिऔध' और मैथिली–शरण गुप्त जैसे द्विवेदीयुगीन कवि भी अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कर रहे थे। इसी समय 'स्वदेश' पत्र प्रारम्भ होता है। शुरूआती दौर में ही यह साहित्य की ओर उन्मुख होता दिखायी देता है। इसमें अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' मैथिलीषरण गुप्त के साथ–साथ प्रसाद और निराला जैसे छायावादी कवि भी प्रकाशित होते रहे। 'स्वदेश' पत्रिका ने रूपनारायण पाण्डेय, शम्भूदयाल श्रीवास्तव, रामअवध द्विवेदी, मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी', शिवराम शुक्ल, कवि 'अंकुश' जैसे नए कवियों की कविताओं को भी छपने का अवसर प्रदान किया।

तत्कालीन परिस्थितियों और उद्देश्यों के कारण 'स्वदेश' का स्वर बहुत कुछ राष्ट्रीय चेतना से ओत–प्रोत रहा। साथ ही इसमें नवजागरण, भक्ति एवं रोग चेतना से सम्बन्धित कविताएँ भी प्रकाशित हुई। 'स्वदेश' के प्रकाशन का मूल उद्देश्य ही राष्ट्रीय–चेतना का स्वर था, अतः इसमें प्रकाशित होने वाली अधिकांश कविताओं में स्वाधीनता–संघर्ष का स्वर सुनाई देता है। 'स्वदेश' में प्रकाशित पं0 रूपनारायण पाण्डेय की कविता की कुछ पंक्तियाँ, जो मनुष्य को उसके कर्त्तव्य और नैतिकता का बोध कराती हैं–

''भारतीय मनुष्य की दिन रात हो यह प्रार्थना।
हम सदा करते रहें बस सत्य की अभ्यर्थना।
धर्म का धारण किये, उस की करें संवर्द्धना।
स्वार्थ–वश भूलें नहीं परमार्थ की आराधना।।''[5]

इसी प्रकार 'स्वदेश' में प्रकाशित गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' की कविता 'भीषण पाप का भीषण फल' भी राष्ट्रीय–चेतना से ओत–प्रोत दिखायी देती है। इस कविता के माध्यम से कवि ने देशद्रोहियों को चेतावनी दी है उन्होंने विभीषण और जयचंद के माध्यम से तत्कालीन देशद्रोहियों को ललकारा है–

''कर के कुल–संहार विभीषण ने क्या पाया।
कीर्ति कलंकित हुई जाति का नाम मिटाया।
अयशी है जयचन्द और निज राज्य गवाया।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

देश–द्रोही किसी देश ने कब अपनाया?
यहीं भोगता वह नरक अपने दारूण पाप से।।"[6]

'स्वदेश' में स्वाधीनता–आन्दोलन के वीरों के व्यक्तित्त्व पर भी कुछ कविताएँ प्रकाशित हुई हैं, इसमें बाल गंगाधर तिलक एवं लाला लाजपत राय के ऊपर लिखीं गयी कविताएँ महत्त्वपूर्ण हैं। तिलक जी के व्यक्तित्त्व पर पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र ने –'भारत तिलक' नाम से जो कविता लिखी, वह 1 दिसम्बर 1919 के अंक में प्रकाशित हुई। कवि ने इसमें तिलक के व्यक्तित्त्व और स्वाधीनता – आन्दोलन में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करते हुए लिखा है कि–

"छोड़ सुखों को दौड़ दुःख पर जाने वाले,
वृद्धा माँ का कष्ट देख, पछताने वाले,
शताब्दियों की छुटी एकता लाने वाले,
फँसी देश की नाव, सहर्ष बचाने वाले,
नित जन्मभूमि के कार्यरत, समय नहीं मारे पलक,
जय भारत – भाल विशाल के, श्रीयुत गंगाधर तिलक"[7]

'स्वदेश' का सम्पूर्ण समय जहाँ एक ओर स्वाधीनता के लिए संघर्ष कर रहा था, वहीं दूसरी ओर सामाजिक उत्थान के लिए भी पूरी तत्परता के साथ प्रयत्नशील था। महिलाओं, विधवाओं, किसानें दलितों और गरीबों को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा था। छायावादी पत्रकारिता में प्रकृति के साथ–साथ मानवता की अनुगूँज भी सुनाई पड़ रही थी। 'स्वदेश' में किसानों की वास्तविक स्थिति का परिचय कराने वाली कविताएँ प्रचुर मात्रा में लिखीं जा रही थी। किसानों की दयनीय स्थिति को चित्रित करती हुई कविता है – 'मरते हैं भूख प्यास के मारे किसान हाय, जो 23 जून 1919 ई0 के अंक में प्रकाशित हुई। इसकी रचना त्रिशूल ने की थी। दिन–रात कठिन परिश्रम करने वाले, खेतों में जान देने वाले किसान कभी प्रकृति के कोप का भाजन बनते हैं, तो कभी जमींदारों एवं अंग्रेजी सरकार द्वारा लगान में वृद्धि किए जाने से पीड़ित रहते हैं–

" ओठो पे आ रही है, गरीबों की जान हाय।
बढ़ता ही जा रहा है दिनों दिन लगान हाय।
पानी नहीं मिला है गये सूख धान हाय।
जो भीम से बली थे बने धान–पान हाय।
मुँह से नहीं निकालते, करूणा निधान हाय।
मारते हैं भूख–प्यास के मारे किसान हाय।।"

किसानों की इसी दीन–हीन स्थिति का चित्रण 'हा ! हा ! बड़ी विपत्ति में दुखिया किसान है–' शीर्षक कविता करती है, जो 'स्वदेश' के 13 अप्रैल 1919 ई0 के अंक में प्रकाशित हुई। सम्पूर्ण विपदाओं को स्वयं सहकर किसान देश की जनता के लिए अन्न ऊपजाते हैं, हिम्मत नहीं हारते, परन्तु स्वयं कितने लाचार हैं, विवश हैं–

"गर्मी में झुलसते, सर्दी में नंगे अकड़ रहे।
पीले पड़े खज़ाँ के हैं पत्ते से झड़ रहे।
फिर भी नहीं वे हाथ से धरते कमान हैं।
हा! हा! बड़ी विपत्ति में दुखिया किसान है।"[8]

कविता के साथ–साथ हिन्दी कथा–साहित्य के क्षेत्र में भी तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इनमें प्रकाशित कहानी, नाटक, लेखों आदि के माध्यम से भारतीय जनमानस सचेत और जागरूक हो रहा था। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि स्वतन्त्रता आन्दोलन और नवजागरण में इन पत्रिकाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। 'स्वदेश' ने अपनी कहानियों के माध्यम से नवजागरण एवं स्वाधीनता आन्दोलन के लिए जनजागृति का कार्य किया। इस पत्रिका में अपने युग के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कथाकार प्रकाशित हो रहे थे। 'स्वदेश' में छपने वाले प्रमुख कथाकार थे– विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', वृन्दावनलाल वर्मा, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', सीताराम वर्मा, मुनीश्वर त्रिपाठी गिरीन्द्रनाथ उपाध्याय, मुन्नीलाल विद्यार्थी 'आदित्य' आदि। मौलिक कहानियों के साथ–साथ 'स्वदेश' में दूसरी भाषाओं की कहानियों के अनुवाद भी प्रकाशित हुए। 'स्वदेश' के प्रकाशन के साथ ही सामाजिक चेतना एवं नवजागरण से जुड़ी हुई कहानियाँ प्रकाशित होने लगी। निष्कर्ष रूप में हम देखते हैं कि 'स्वदेश' में प्रकाशित कहानियों ने कथा–संसार को समृद्ध करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में छायावादी हिन्दी–पत्रकारिता का विशेष योगदान है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

पत्रकारिता के क्षेत्र में छायावादी साहित्यकारों का रूझान साहित्यिक पत्रकारिता की ओर अधिक रहा है। इसीलिए सभी कवियों अथवा साहित्यकारों ने कोई न कोई साहित्यिक पत्रिका अवश्य निकाली। खुद भी छपे, साहित्यकारों को भी छापा। छायाकालीन शब्दकारों द्वारा निकाली गयी उल्लेखनीय पत्र–पत्रिकाएँ हैं– 'स्वदेश' (1919 ई0, दशरथप्रसाद द्विवेदी), 'कर्मवीर' (1920 ई0–माखनलाल चतुर्वेदी), 'चाँद' (1920 ई0, रामरख सहगल) 'श्री शारदा' (1920 ई0, नर्वदाप्रसाद मिश्र), 'माधुरी' (1922 ई0), दुलारेलाल भार्गव, रूपनारायण पाण्डेय), 'विशाल भारत' (1928 ई0, बनारसीदास चतुर्वेदी) 'सुकवि' (1928 ई0, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही'), 'हंस' (1930 ई0, मुंशी प्रेमचंद), 'रंगीला' (1932 ई0, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'), 'जागरण' (1932 ई0, शिवपूजन सहाय) एवं 'रूपाभ' (1938 ई0, सुमित्रानन्दन पन्त और नरेन्द्र शर्मा) आदि।

छायावाद की प्रस्थान–पीठिका पर बैठकर अपने वर्तमान और सुदूर भविष्य की ओर झाँकता हुआ 'स्वदेश' अपने विषय–वैविध्य में बेमिसाल बनकर प्रकटित हुआ। स्वाधीनता आन्दोलन के समय, समाज और राजनीति पर वृहद् दृष्टिपात करते हुए भी साहित्य की सुगन्ध को बचाये रखा। कोई भी साहित्यकार या पत्रकार समाज एवं उसमें होने वाले परिवर्तनों से कट कर अपने साहित्य का निर्माण नहीं करता। 'स्वदेश' में प्रकाशित विभिन्न नाटकों एवं प्रहसनों ने इसकी साहित्यिक उपयोगिता को और बढ़ा दिया।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि 'स्वदेश' की विषय–वस्तु अत्यन्त व्यापक थी। इसमें देशी–विदेशी समाचारों के साथ–साथ साहित्यिक गतिविधियों को भी प्रमुखता दी गई। यद्यपि इसका प्रधान स्वर राजनीतिक था, परन्तु साहित्य के सर्वांगीण विकास में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। ''साहित्य के सन्दर्भ में 'स्वदेष' की एक स्पष्ट दृष्टि थी। यह ऐसे साहित्य का पक्षधर था जो किसी विचारधारा से बंधी न हो, अपितु देश एवं समाज के लिए हितकारी हो।''[9] 'स्वदेश' ने अपने लेखों से हिन्दी–साहित्य की प्रत्येक विधा को समृद्ध किया है। कविता, कहानी, नाटक के साथ–साथ आलोचना और निबन्ध के क्षेत्र में भी यह आगे रहा है। सम्पूर्ण हिन्दी–साहित्य का विकसित स्वरूप 'स्वदेश' में प्रकाशित लेखों में दिखलाई पड़ता है। मिश्रबन्धु, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी और रघुपति सहाय जैसे बड़े साहित्यकारों की रचनाओं का इसमें प्रकाशित होना इसकी महत्ता को स्वयं ही दर्शाता है। सन् 1919 से 1938 तक प्रकाशित होने वाला 'स्वदेश' हिन्दी–पत्रकारिता, हिन्दी–साहित्य और छायावादी–युग का एक उल्लेखनीय पत्र है। हिन्दी–साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में इसका योगदान निर्विवाद है। सचमुच, छायावाद की साहित्यकार मनीषा ने हिन्दी के पत्र–साहित्य का दुर्लभ उपकार किया है, क्योंकि बिना साहित्यिक सम्पुट के पत्रकारिता की यात्रा अबल और असुन्दर लगती है। कदाचित् इस प्रतिज्ञाबोध के साथ छायावाद की इतिहासभूमि में बैठे सभी साहित्यकार साहित्य–सृजन और पत्र–सृजन एक साथ कर रहे थे और यही दायित्व एक साथ निभा रहे थे– 'स्वदेश' के जनक पं0 दशरथप्रसाद द्विवेदी। यद्यपि 'स्वदेश' जैसे तत्कालीन महत्त्वपूर्ण पत्र से आज का हिन्दी संसार भले ही कम परिचित है, परन्तु इसके प्रत्येक अंक ओर विशेषतः विभिन्न अवसरों पर प्रकाशित होने वाले इसके विशेषांक हिन्दी–साहित्य और छायावादयुगीन हिन्दी–पत्रकारिता को समृद्ध करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'हिन्दी–साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास : डॉ कुसुम राय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ0–406, 2015, ISBN –978–93–5146–090–9.
2. पत्रकारिता और हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता, 'मानक हिन्दी निबन्ध' ,चतुर्व्यूह प्रकाशन, गोरखपुर, प्रथम संस्करण–2000, पृ0–100.
3. मिसेज बेसेन्ट, स्वदेश–6 अप्रैल 1919 ई0, 'भारतीय महिलाओं पर मिसेज बेसेन्ट'।
4. शाही, श्री हर्षवर्धन, गोरखपुर महोत्सव–97, पृ.–21.
5. पाण्डेय, पं0 रूपनारायण, शुभकामना, स्वदेश, 11 मई 1919.
6. शुक्ल, गया प्रसाद, 'सनेही', 'भीषण पाप का भीषण फल', स्वदेश–4 अगस्त, 1919 ई0।
7. पाण्डेय बेचन, शर्मा उग्र, 'भारत तिलकः स्वदेश, 1 दिसम्बर 1919 ई0।
8. 'हा! हा! बड़ी विपत्ति में दुखिया किसान है', स्वदेश, 13 अप्रैल 1919.
9. 'स्वदेश' की साहित्य–चेतना, पृ0–114 प्रत्यूष दुबे, विश्व–विद्यालय प्रकाशन वाराणसी, ISBN.81.7124.339.8.

*****